

डॉक्टरल शोधार्थियों में शोध-चिन्ता एवं शोध नैतिकता के मध्य संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अमूल कुमार कन्नौजिया¹, डॉ. अरविंद सिंह²,

¹शोधार्थी, लखनऊ विश्विद्यालय, लखनऊ

²सह-आचार्य, फीरोज गाँधी कॉलेज, रायबरेली

¹Email ID: amulk267@gmail.com, ²Email: dr.arvindsingh.rbl@gmail.com

सारांश

वैज्ञानिक अनुसंधान समस्याओं के विश्वसनीय और वैध समाधान खोजने के लिए योजनाबद्ध और व्यवस्थित तरीके से डेटा एकत्र करने, उसका विश्लेषण करने, उसकी व्याख्या करने, उसका मूल्यांकन करने और उसकी रिपोर्ट करने की प्रक्रिया है। वैज्ञानिक अनुसंधान की चिन्ता व्यक्ति के अनुसंधान व्यवहार को निर्देशित करती है और अनुसंधान करने में अनिच्छा, असुरक्षा, असहजता और बेचैनी जैसी भावनाओं का कारण बनती है। डॉक्टरल स्तर पर, शोधार्थी को कई प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है, जैसे शोध का विषय चुनना, साहित्य की समीक्षा करना, शोध प्रारूप तैयार करना, डेटा का संकलन करना और उसका विश्लेषण करना, थीसिस लिखना और उसे पब्लिश करना। इन चरणों के दौरान, समय की कमी, एकेडमिक उम्मीदें, शोध की जटिलता, सुपरवाइजर और संस्थानों का दबाव, शोध के नतीजों को लेकर अनिश्चितता जैसी बातें शोध चिन्ता उत्पन्न करती हैं। दूसरी ओर, शोध की विश्वसनीयता, प्रमाणिकता और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए शोध नैतिकता का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। शोध नैतिकता में ईमानदारी, निष्पक्षता, पारदर्शिता, प्रतिभागियों की गोपनीयता, जानकारी के साथ सहमति, सही तरीके से संदर्भ देना और साहित्यिक चोरी से बचना जैसे सिद्धांत शामिल हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य डॉक्टरल शोधार्थियों में शोध-चिन्ता एवं शोध नैतिकता के मध्य संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। यह एक वैचारिक अध्ययन है जो शोध से जुड़ी चिन्ता और शोध नैतिकता के बारे में उपलब्ध शोध एवं अलग-अलग सैद्धांतिक दस्तावेजों का विश्लेषण करता है। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ है कि शोध चिन्ता किस तरह शोधार्थी के फ़ैसले लेने की क्षमता, शोध के दौरान उनके व्यवहार, आत्मविश्वास और नैतिक फ़ैसले लेने की क्षमता पर प्रभाव डालती है।

मुख्य बिंदु: शोध-चिन्ता, शोध नैतिकता, डॉक्टरल शोधार्थी, शोध व्यवहार, अकादमिक दबाव, शोध संस्कृति, नैतिक मूल्य, शोध-परामर्श

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा प्रणाली में अनुसंधान ज्ञान, सृजन, नवाचार और सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। क्रेसवेल के अनुसार, 'अनुसंधान एक विषय या मुद्दे के प्रति हमारी समझ को बढ़ाने के लिए जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की प्रक्रिया है।' डॉक्टरल शोधकर्ताओं के लिए अनुसंधान प्रक्रिया न केवल बौद्धिक रूप से बल्कि भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से भी चुनौतीपूर्ण होती है। अनुसंधान का दबाव, समय सीमा, प्रकाशन की अपेक्षाएं, मार्गदर्शन की गुणवत्ता और संसाधनों की उपलब्धता शोधकर्ताओं में अनुसंधान संबंधी चिन्ता का कारण बन सकती है (ओनवुण्गबुजी और जिआओ, 1997)। शोध संबंधी चिन्ता से तात्पर्य शोध करते समय भय, बेचैनी या आत्मविश्वास की कमी की स्थिति से है। शोधकर्ता को शोध कार्य तनावपूर्ण या कठिन लगते हैं। जैसे-जैसे शोधकर्ता अपने शोध को लेकर चिंतित होता जाता है, उसके भय और शंकाओं के परिणामस्वरूप उसका प्रदर्शन प्रभावित होता है। पुस्तकालय संबंधी चिन्ता, सांख्यिकी संबंधी चिन्ता, लेखन या रचना संबंधी चिन्ता, शोध भाषा संबंधी चिन्ता और शोध प्रक्रिया संबंधी चिन्ता, ये सभी शोध संबंधी चिन्ता के पहलू हैं। ओनवुण्गबुजी (1997) के अनुसार, शोध संबंधी चिन्ता को

सरल शब्दों में उस चिंता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका अनुभव छात्र शोध पद्धति के पाठ्यक्रमों में करते हैं। यह एक बहुआयामी तंत्र है जिसमें पुस्तकालय संबंधी चिंता, सांख्यिकी संबंधी चिंता, रचना संबंधी चिंता और शोध प्रक्रिया संबंधी चिंता शामिल हैं। उच्च स्तर की शोध संबंधी चिंता शोध उत्पादकता, आत्म-प्रभावकारिता और शोध की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है (पापनास्तासियो और जेम्बिलास, 2008)।

नैतिकता व्यवहार के वे मानदंड या मानक हैं जो हमारे व्यवहार और दूसरों के साथ हमारे संबंधों के बारे में नैतिक विकल्पों का मार्गदर्शन करते हैं। व्यवहार में नैतिकता, शोध नैतिकता के दिशानिर्देश शोध समुदाय के बुनियादी मानदंडों और मूल्यों को निर्दिष्ट करते हैं। दूसरे शब्दों में, शोध नैतिकता को शोध में नैतिक और कानूनी रूप से सही कार्य करने के रूप में समझा जा सकता है। शोध नैतिकता शब्द उन मूल्यों, मानदंडों और संस्थागत व्यवस्थाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को संदर्भित करता है जो वैज्ञानिक गतिविधियों के गठन और विनियमन में सहायक होते हैं। शोध नैतिकता व्यवहार में वैज्ञानिक नैतिकता का संहिताकरण है। शोध नैतिकता के दिशानिर्देश शोध समुदाय के बुनियादी मानदंडों और मूल्यों को निर्दिष्ट करते हैं। दूसरे शब्दों में, शोध नैतिकता को शोध में नैतिक और कानूनी रूप से सही कार्य करने के रूप में समझा जा सकता है। शोधकर्ताओं के नैतिक चरित्र और क्षमताओं पर जोर देने के साथ-साथ, शुरुआती करियर वाले शोधकर्ताओं के तौर पर डॉक्टरेट शोधकर्ताओं के विकास पर भी चर्चा की जाती है। इसमें इस बात को माना जाता है कि डॉक्टरेट प्रोग्राम लोगों को नैतिक व्यवहार के साझा मूल्यों और तौर-तरीकों से परिचित कराने में अहम भूमिका निभाते हैं (फिशर और अन्य, 2009)। हालाँकि उच्च-गुणवत्ता वाले शोध के लिए नैतिकता को आधारभूत मानते हैं, फिर भी अक्सर मजबूत कार्यप्रणाली संबंधी कौशल विकसित करने पर विशेष बल दिया जाता है, जबकि नैतिकता को केवल एक मॉड्यूल या वर्कशॉप तक सीमित रखा जाता है (वॉन उंगर 2016), या फिर औपचारिक नैतिक कागजी कार्रवाई पूरी करने में आत्मविश्वास बढ़ाने पर ध्यान दिया जाता है। यहाँ, शोध नैतिकता को केवल औपचारिक 'मंजूरी' पाने और 'शोध के विषयों से जुड़ी चिंताओं की शब्दावली का इस्तेमाल कैसे करें, यह दिखाने' के कौशल तक सीमित कर दिया जाता है (मैकफार्लेन 2009, पृष्ठ 152)। डॉक्टरेट शोधकर्ताओं की उन चुनौतियों का सामना करने की क्षमताओं पर कम ध्यान दिया जाता है जो लगातार और अक्सर अप्रत्याशित रूप से सामने आती हैं, जबकि ऐसे कई शोधकर्ताओं को ऐसे अनुभवों से निपटने का बहुत कम अनुभव होता है (चेम्बर्स और बेरेस 2016)। इसलिए, डॉक्टरेट शोधकर्ताओं को केवल प्रक्रियात्मक नैतिकता और सामान्य 'चेकलिस्ट' का पालन करने जैसे नैतिक व्यवहार के विचारों से आगे ले जाना ज़रूरी है। साथ ही, एक नैतिक शोधकर्ता के तौर पर उनकी जिम्मेदारियों को समझने में उनकी मदद करना और जानकारीपूर्ण फैसलों व आलोचनात्मक सोच के आधार पर शोध संबंधी निर्णयों को तर्कसंगत बनाने की उनकी क्षमता विकसित करने पर ध्यान देना आवश्यक है (वेरिच और हार्विल 2013, वेलाडो और इलियट 2018)।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन

राजली फ़र्नांडो (2024) अध्ययन में डॉक्टरेट शोधार्थियों के लिए शोध नैतिकता के आवश्यक तत्वों का अध्ययन किया। अध्ययन में प्रत्यक्षवाद, आलोचनात्मक यथार्थवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, व्याख्यावाद, व्यावहारिकतावाद जैसे पाँच शोध प्रतिमानों की समीक्षा की गई। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि प्रत्येक शोध प्रतिमान की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं, जो शोधार्थियों को उचित एवं नैतिक शोध प्रक्रिया अपनाने में सहायता करती हैं। अध्ययन ने शोध प्रतिमान के चयन को शोध डिजाइन, पद्धति और सांख्यिकीय विश्लेषण की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण बताया। शोधार्थियों को नैतिक मानकों के अनुरूप शोध प्रतिमान चुनने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

ट्रोलेट एट एल. (2023) निष्कर्षों में यह पाया गया कि शोध की अखंडता, हितों का टकराव, प्रतिभागियों के अधिकारों का सम्मान, शोधार्थियों का अपर्याप्त मार्गदर्शन, प्रदर्शन का दबाव तथा अपर्याप्त नैतिक मार्गदर्शन प्रमुख मुद्दे पाए गए। अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक

एवं प्रदर्शन-केंद्रित शोध वातावरण अनैतिक शोध व्यवहार को बढ़ावा दे सकता है। लेखकों ने शोध नैतिकता के प्रभावी पालन के लिए उचित प्रशिक्षण, संस्थागत सहयोग और स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देशों की आवश्यकता पर बल दिया।

कोकामन करोग्लू (2022) ने शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों में शोध-चिन्ता के स्तर का अध्ययन किया। परिणामों में विद्यार्थियों की शोध-चिन्ता का स्तर मध्यम पाया गया। साथ ही, लिंग, शोध-पाठ्यक्रम लेने, विभाग तथा कक्षा-स्तर के आधार पर शोध-चिन्ता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन से यह भी संकेत मिलता है कि शोध-चिन्ता शोध के प्रति असहजता, घबराहट तथा आत्मविश्वास की कमी से संबंधित हो सकती है।

Yildirim एवं Haşiloğlu (2018) ने स्नातक विद्यार्थियों में वैज्ञानिक शोध-चिन्ता का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि लिंग, अध्ययन विभाग तथा मापन एवं मूल्यांकन संबंधी पाठ्यक्रम लेने से शोध-चिन्ता में महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। वहीं, पुस्तकालय एवं वेब-आधारित सूचना स्रोतों का उपयोग शोध-चिन्ता को कम करने से संबंधित पाया गया। शोधकर्ताओं ने विद्यार्थियों में सूचना-संसाधनों के प्रभावी उपयोग एवं पुस्तकालय की आदत विकसित करने पर बल दिया।

Rezaei एवं Zamani-Miandashti (2013) ने कृषि विषय के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में शोध-स्व-प्रभावकारिता, शोध-चिन्ता एवं शोध के प्रति अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि विद्यार्थियों में शोध-चिन्ता का स्तर मध्यम, शोध-स्व-प्रभावकारिता उच्च तथा शोध के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक थी। Ph.D. विद्यार्थियों की शोध-स्व-प्रभावकारिता M.Sc. विद्यार्थियों से अधिक पाई गई। शोध-स्व-प्रभावकारिता का शोध के प्रति अभिवृत्ति से सकारात्मक तथा शोध-चिन्ता से नकारात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया।

Kracker and Wang (2002) ने विद्यार्थियों में शोध चिन्ता तथा शोध के प्रति उनकी धारणाओं का अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि शोध प्रक्रिया के दौरान 59% विद्यार्थियों ने चिन्ता, 47% ने शोध को कठिन तथा 41% ने आत्मविश्वास का अनुभव व्यक्त किया। शोध-चिन्ता का संबंध शोध शुरू करने, जानकारी एकत्र करने, लिखने तथा समय प्रबंधन जैसे संज्ञानात्मक पक्षों से पाया गया।

अध्ययन का औचित्य

उच्च शिक्षा में, अनुसंधान को ज्ञान सृजन, नवाचार और सामाजिक विकास का मूलभूत आधार माना जाता है। डॉक्टरेट स्तर का अनुसंधान विश्वविद्यालयों की अकादमिक गुणवत्ता, अनुसंधान संस्कृति और बौद्धिक पूंजी को मजबूत करता है। डॉक्टरेट शोधकर्ताओं को अनुसंधान प्रक्रिया के दौरान कई मानसिक और भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समस्या चयन, अनुसंधान डिजाइन, डेटा संग्रह, सांख्यिकीय विश्लेषण और शोध प्रबंध लेखन जैसे चरणों में अक्सर भय, तनाव और आत्म-संदेह उत्पन्न होते हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से अनुसंधान चिन्ता कहा जाता है (ऑनवुएगबुजी और जिआओ, 1997)। उच्च स्तर की शोध संबंधी चिन्ता शोधकर्ताओं की कार्यकुशलता, आत्म-प्रभावकारिता एवं शोध उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है (पापनास्तासियो और ज़ेम्बिलास, 2008)। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में, यह समस्या और भी जटिल हो जाती है, क्योंकि विश्वविद्यालयों में शोध संसाधनों, प्रशिक्षण सुविधाओं एवं पर्यवेक्षण की गुणवत्ता के मामले में स्पष्ट असमानताएं हैं (यूजीसी, 2020) प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य डॉक्टरेट शोधकर्ताओं के संदर्भ में, शोध संबंधी चिन्ता, शोध नैतिकता एवं दृष्टिकोण के बीच संबंधों का एकीकृत विश्लेषण प्रदान करना है। यह अध्ययन न केवल शोधकर्ताओं द्वारा सामना की जाने वाली शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों को समझने में मदद करेगा, बल्कि विश्वविद्यालय प्रशासकों, शोध पर्यवेक्षकों और नीति निर्माताओं को अधिक सहयोगात्मक, तनाव-मुक्त और प्रभावी शोध वातावरण विकसित करने के लिए व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान करेगा। इस संदर्भ में, उच्च शिक्षा और शोध के मौजूदा माहौल में शोधार्थी के शोध चिन्ता और शोध नैतिकता के मध्य संबंधों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह अध्ययन यह समझने में मदद कर सकता है कि शोध संबंधी मानसिक तनाव और नैतिक शोध व्यवहार किस हद तक एक-दूसरे से जुड़े हैं। साथ ही, यह उन खास क्षेत्रों और

ज़रूरतों की पहचान करने में भी मदद कर सकता है जहाँ शोधार्थी के लिए असरदार शोध प्रशिक्षण, काउंसलिंग और नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है।

शोध

जॉन डब्ल्यू. क्रेस्वील के अनुसार, शोध चरणों की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उपयोग किसी विषय या मुद्दे के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने के लिए जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने हेतु किया जाता है। पेटन (1979) के अनुसार, शोध किसी विशेष सवाल का जवाब खोजने की एक व्यवस्थित, निष्पक्ष और भरोसेमंद प्रक्रिया है। कर्लिंगर (1986) के अनुसार, शोध काल्पनिक प्रस्तावों, तथ्यों, किसी सवाल के जवाब या किसी समस्या के समाधान की एक व्यवस्थित, नियंत्रित, अनुभव-आधारित और आलोचनात्मक जांच है। सेकरन (2000) शोध को किसी खास समस्या के बारे में एक व्यवस्थित, डेटा-आधारित, आलोचनात्मक और वैज्ञानिक जांच या पड़ताल के तौर पर परिभाषित करते हैं, जिसका मकसद उसके जवाब या समाधान खोजना होता है। कोठारी (2013) के अनुसार, शोध ज्ञान के मौजूदा भंडार में एक मौलिक योगदान है जो उसके विकास में मदद करता है।

चिंता

फिशर (1991) के अनुसार, भावनात्मक स्थिति में "चिंता को एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा के रूप में देखा जाता है, यानी यह अनुभव के दायरे में आती है और इसका वैज्ञानिक अस्तित्व भौतिक, मात्रात्मक घटनाओं पर आधारित होना चाहिए"। मैकग्राथ (2002) ने बताया कि डर और चिंता अक्सर छात्रों के अपनी शोध-प्रबंध पूरी न कर पाने का कारण बनते हैं और कुछ छात्र शोध-प्रबंध की प्रक्रिया को लेकर काफी चिंता महसूस करते हैं।

'साइकोलॉजी टुडे' (2020) के अनुसार, शोध चिंता में फिक्र, घबराहट या डर जैसी भावनाएं शामिल होती हैं। हालांकि यह सुखद नहीं होता, लेकिन कभी-कभी एंजायटी महसूस होना स्वाभाविक और कभी-कभी फायदेमंद भी हो सकता है: यह संकेत देकर कि कुछ ठीक नहीं है, एंजायटी लोगों को खतरे से बचने और ज़रूरी व सार्थक बदलाव करने में मदद कर सकती है।

शोध चिंता

ओनवुएगबुजी (1997) के अनुसार, शोध संबंधी चिंता को सरल शब्दों में उस चिंता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका अनुभव छात्र शोध पद्धति के पाठ्यक्रमों में करते हैं। यह एक बहुआयामी तंत्र है जिसमें पुस्तकालय संबंधी चिंता, सांख्यिकी संबंधी चिंता, रचना संबंधी चिंता और शोध प्रक्रिया संबंधी चिंता शामिल हैं। ओनवुएगबुजी और विल्सन (2003) शोध संबंधी चिंता में योगदान देने वाले तीन कारकों का विश्लेषण करते हैं: परिस्थितिजन्य, स्वभावगत और पर्यावरणीय। परिस्थितिजन्य कारकों में पूर्व ज्ञान और अनुभव शामिल हैं। स्वभावगत कारक गणित, शोध सांख्यिकी में संलग्न होने पर आत्मसम्मान और इन विषयों की कथित उपयोगिता जैसे कारक हैं। पर्यावरणीय कारकों में सीखने की शैली, आयु, लिंग और जातीयता शामिल हैं।

पापानस्टासियो और जेम्बिलास (2008) ने पाया कि जो छात्र अपने पेशे के लिए शोध को ज़रूरी मानते थे, उनमें चिंता का स्तर ज़्यादा था। लेकिन जिन छात्रों को शोध से घबराहट और तनाव होता है, उनमें शोध को लेकर ज़्यादा एंजायटी पैदा हो जाती है, जिससे उनके काम पर असर पड़ सकता है। अककोल्टेकिन (2014) ने कहा है कि शोध चिंता, चिंता का ही एक अलग रूप है। ऊपर दी गई परिभाषाओं के अनुसार, शोध चिंता का अर्थ है शोध करते समय डर, बेचैनी या आत्मविश्वास की कमी महसूस होना। शोधार्थी को शोध के कार्य तनावपूर्ण या मुश्किल लग सकते हैं। जैसे-जैसे शोधार्थी अपनी शोध को लेकर घबराने लगता है, उसके डर और शक की वजह से उसके शोध कार्य पर बुरा असर पड़ता है। लाइब्रेरी एंजायटी,

स्टैटिस्टिकल एंगजायटी, लिखने या कंपोजिशन से जुड़ी चिंता, शोध की भाषा से जुड़ी चिंता और शोध प्रक्रिया से जुड़ी चिंता - ये सभी शोध चिंता शोध के ही अलग-अलग पहलू हैं।

नैतिकता की अवधारणा

नैतिकता व्यवहार के वे नियम या मानक हैं जो हमारे व्यवहार और दूसरों के साथ हमारे संबंधों के बारे में नैतिक फैसलों में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। 'नैतिक' वह शब्द है जो सामान्य सिद्धांतों, सही व्यवहार और अच्छे चरित्र को दर्शाता है। नैतिकता एक 'जीवन-शैली' या जीने का तरीका है। नैतिकता को परिभाषित करने का सबसे आसान तरीका है - आचरण के वे नियम जो स्वीकार्य और अस्वीकार्य व्यवहार के बीच अंतर करते हैं। नैतिकता को एक नैतिक दर्शन या नैतिक नियमों के समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिनका पालन कोई व्यक्ति या लोगों का समूह करता है।

शोध नैतिकता

शोध अब उच्च शिक्षा देने वाले एकेडमिक संस्थानों और सिर्फ शोध के लिए बने संस्थानों, दोनों का एक ज़रूरी हिस्सा बन गया है। भारत की नई शिक्षा नीति (2020) के तहत, सभी मौजूदा और नए उच्च शिक्षा संस्थान (HEIs) रिसर्च-इंटेंसिव यूनिवर्सिटीज़ (RUs), टीचिंग यूनिवर्सिटीज़ (TUs) और ऑटोनॉमस डिग्री-देने वाले कॉलेजों (ACs) में बदल जाएंगे। इसलिए, शोध से मिलने वाली आत्म-संतुष्टि के अलावा, नई जानकारी को दूसरों तक पहुंचाना भी किसी व्यक्ति, लोगों के समूह या संस्थान की काबिलियत और उपलब्धियों को आंकने का एक अहम पहलू है। दूसरी ओर, शोध संस्थानों को लगातार और असरदार ढंग से ट्रेनिंग और शिक्षा देनी चाहिए, और शिक्षा संस्थान को अपने स्तर पर रिसर्च इकोसिस्टम को सपोर्ट करने के लिए नीतियां और प्रक्रियाएं बनानी चाहिए। संस्थान की भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए।

अनुसंधान में नैतिक मानदंडों का पालन करना कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला, मानदंड अनुसंधान के उद्देश्यों को बढ़ावा देते हैं, जैसे ज्ञान, सत्य और त्रुटि से बचाव। उदाहरण के लिए, मनगढ़त तथ्यों पर प्रतिबंध लगाना। शोध आंकड़ों को गलत तरीके से प्रस्तुत करना या उनमें हेरफेर करना सत्य को बढ़ावा देता है और त्रुटियों को कम करता है।

दूसरा, चूंकि अनुसंधान में अक्सर विभिन्न विषयों और संस्थानों के कई लोगों के बीच बहुत अधिक सहयोग और समन्वय शामिल होता है, इसलिए नैतिक मानक सहयोगात्मक कार्य के लिए आवश्यक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं, जैसे कि विश्वास, जवाबदेही, पारस्परिक सम्मान और निष्पक्षता। उदाहरण के लिए, अनुसंधान में कई नैतिक मानदंड, जैसे कि लेखकत्व के लिए दिशानिर्देश, नैतिक मानकों का पालन करते हैं। कॉपीराइट और पेटेंटिंग नीतियां, डेटा साझाकरण नीतियां और सहकर्मियों समीक्षा में गोपनीयता नियम, बौद्धिक संपदा हितों की रक्षा करते हुए सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए बनाए गए हैं। अधिकांश शोधकर्ता अपने योगदान के लिए श्रेय प्राप्त करना चाहते हैं और नहीं चाहते कि उनके विचारों को चुराया जाए या समय से पहले प्रकट किया जाए।

तीसरा, कई नैतिक मानदंड यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि शोधार्थी को जनता के प्रति जवाबदेह ठहराया जा सके। उदाहरण के लिए, शोध में कदाचार, हितों के टकराव, मानव विषयों की सुरक्षा और पशुओं की देखभाल और उपयोग से संबंधित संघीय नीतियां यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं कि सार्वजनिक धन से वित्त पोषित शोधकर्ताओं को जनता के प्रति जवाबदेह ठहराया जा सके।

चौथा, अनुसंधान में नैतिक मानदंड अनुसंधान के लिए जन समर्थन जुटाने में भी सहायक होते हैं। लोग किसी अनुसंधान परियोजना को वित्त पोषित करने की अधिक संभावना रखते हैं यदि वे अनुसंधान की गुणवत्ता और सत्यनिष्ठा पर भरोसा कर सकें।

शोध संबंधी चिंता एवं शोध नैतिकता के मध्य संबंध: शोध चिंता एवं शोध नैतिकता, शोधकर्ता के अनुभव से जुड़े दो महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक पहलू हैं। शोध चिन्ता का अर्थ शोध प्रक्रिया से जुड़ी एक मानसिक और भावनात्मक स्थिति है, जिसमें शोधकर्ता को शोध का विषय

चुनने, साहित्य की समीक्षा करने, कार्यप्रणाली तय करने, डेटा का विश्लेषण करने, शोध को लिखने और प्रकाशित करने तथा समय-सीमा को पूरा करने जैसे कार्यों को लेकर तनाव, डर, असुरक्षा या दबाव महसूस हो सकता है। इसके विपरीत, शोध नैतिकता रिसर्च नैतिक सिद्धांतों और मानकों का एक समूह है जो योजना बनाने, शोध करने, डेटा इकट्ठा करने और उसका विश्लेषण करने, प्रतिभागियों के साथ बातचीत करने और शोध के नतीजों को प्रस्तुत करने के दौरान ईमानदारी, पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

शोध संबंधी चिंता और शोध नैतिकता के मध्य संबंध को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शोध से जुड़ा अत्यधिक दबाव शोधकर्ता की निर्णय लेने की क्षमता और आचरण को प्रभावित कर सकता है। जब शोधकर्ता समय सीमा, प्रकाशन का दबाव, अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने की चिंता, कार्यप्रणाली संबंधी चुनौतियाँ या पर्यवेक्षकों की अपेक्षाओं जैसे कारकों के कारण अत्यधिक तनाव का अनुभव करते हैं, तो वे कभी-कभी आसान या त्वरित समाधान खोजने के लिए प्रवृत्त हो सकते हैं। ऐसी परिस्थितियाँ साहित्यिक चोरी, डेटा में हेरफेर, परिणामों को विकृत करना, अनुचित उद्धरण और अन्य अनैतिक शोध प्रथाओं की संभावना को बढ़ा सकती हैं। शोध संबंधी चिंता और अकादमिक कदाचार के बीच संबंध को उजागर करने वाले पूर्व अध्ययन भी इस संभावित संबंध को समझने में सहायक होते हैं। हालांकि, यह मान लेना उचित नहीं होगा कि शोध से जुड़ी ज्यादा चिंता का मतलब हमेशा रिसर्च शोध नैतिकता से समझौता करना ही है। कई चीजें-जैसे शोधार्थी की अपनी नैतिक सोच, शोध की ट्रेनिंग, सुपरवाइजर का सपोर्ट, संस्थान का नैतिक माहौल के लिए जरूरी संसाधनों की उपलब्धता और एकेडमिक कल्चर इस रिश्ते पर असर डाल सकती हैं। इसलिए, शोध चिंता और शोध नैतिकता के मध्य संबंध को निश्चित आकड़ों के आधार पर ज्ञात करना चाहिए।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि शोध चिंता एवं शोध नैतिकता ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो डॉक्टरेट स्कॉलर्स के शोध अनुभवों और तौर-तरीकों पर प्रभाव डालते हैं। डॉक्टरेट शोध प्रक्रिया में कई जटिल चरणों से गुजरना पड़ता है, जैसे विषय का चयन, सहिया समीक्षा, शोध डिज़ाइन तैयार करना, डेटा इकट्ठा करना, सांख्यिकीय विश्लेषण, थीसिस लिखना और पब्लिकेशन करना, इन चरणों के दौरान, समय की कमी, एकेडमिक उम्मीदें, शोध की जटिलता, पब्लिश करने का दबाव, सुपरवाइजर की उम्मीदें और शोध के नतीजों को लेकर अनिश्चितता जैसे कारक शोधार्थी में शोध चिंता उत्पन्न करती हैं। साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ है कि अत्यधिक शोध चिंता शोधार्थी में आत्म-क्षमता, शोध प्रोडक्टिविटी, शोध के प्रति नज़रिए और उनके काम की क्वालिटी पर असर डाल सकती है। यह अध्ययन इस बात पर बल देती है कि उच्च गुणवत्ता और भरोसेमंद शोध करने के लिए शोध नैतिकता आवश्यक है। नैतिक सिद्धांत-जैसे ईमानदारी, निष्पक्षता, पारदर्शिता, जवाबदेही, प्रतिभागियों की गोपनीयता, सूचित सहमति, सही साइटेशन और साहित्यिक चोरी से बचना, शोध की विश्वसनीयता बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। शोध नैतिकता को सिर्फ औपचारिक नियमों का पालन करने या नैतिक मंजूरी लेने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि शोधार्थी में नैतिक निर्णय लेने, आलोचनात्मक चिंतन करने और शोध से जुड़ी समस्याओं को समझने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। अंतः यह कहा जा सकता है कि शोधार्थियों के लिए तनाव-मुक्त वातावरण, नैतिक और शोध के अनुकूलन माहौल बनाना जरूरी है। विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों को शोध के तरीकों एवं नैतिकता पर नियमित प्रशिक्षण, शोध निर्देशन, तथा सही एकेडमिक सपोर्ट देना चाहिए।

सन्दर्भ

Poulton, P., Holden, M., & Golledge, C. (2025). Strengthening doctoral students' ethical reflexivity and capabilities:

The use of ethical dialogues between Ireland and Australia. *International Journal of Research & Method in Education*, 48(4), 353–370. <https://doi.org/10.1080/1743727X.2024.2420904>

- Poulton, P., Holden, M., & Golledge, C. (2025).** Strengthening doctoral students' ethical reflexivity and capabilities: The use of ethical dialogues between Ireland and Australia. *International Journal of Research & Method in Education*, 48(4), 353–370. <https://doi.org/10.1080/1743727X.2024.2420904>
- Mat Razali, N. N. S., & Fernando, Y. (2024).** Ethics in doctorate research: A journey through research paradigms. *Journal of Governance and Integrity*, 7(2), 832–840. <https://doi.org/10.15282/jgi.7.2.2024.10558>
- Drolet, M.-J., Rose-Derouin, E., Leblanc, J.-C., Ruest, M., & Williams-Jones, B. (2023).** Ethical issues in research: Perceptions of researchers, research ethics board members and research ethics experts. *Journal of Academic Ethics*, 21, 269–292. <https://doi.org/10.1007/s10805-022-09455>
- Kushwaha, A. (2023).** A study of academic achievement, research aptitude and attitude towards ethical consideration of doctoral research scholars [Doctoral dissertation, Bundelkhand University]. Shodhganga. <http://hdl.handle.net/10603/653089>
- Grosek, S., Pleterski Rigler, D., Podbregar, M., & Erčulj, V. (2023).** Knowledge of and attitudes towards medical research ethics among first year doctoral students in Slovenia at the Faculty of Medicine, University of Ljubljana. *BMC Medical Education*, 23, 828. <https://doi.org/10.1186/s12909-023-04809>
- Löfström, E., Peltonen, J., Frick, L., Niglas, K., & Pyhältö, K. (2023).** Profiles of doctoral students' experience of ethics in supervision: An inter-country comparison. *Higher Education*, 86, 617–636. <https://doi.org/10.1007/s10734-022-00917>
- Kocaman Karoglu, A. (2022).** Research anxiety levels of education faculty students. In M. Shelley, H. Akcay, & O. T. Ozturk (Eds.), *Proceedings of ICRES 2022—International Conference on Research in Education and Science* (pp. 101–108). ISTES Organization.
- Yildirim, S., & Haşiloğlu, M. A. (2018).** Analysis of scientific research related anxiety levels of undergraduate students. *Universal Journal of Educational Research*, 6(2), 313–316. <https://doi.org/10.13189/ujer.2018.060214>
- Rezaei, M., & Zamani-Miandashti, N. (2013).** The relationship between research self-efficacy, research anxiety and attitude toward research: A study of agricultural graduate students. *Journal of Educational and Instructional Studies in the World*, 3(4), 69–77.
- Fisher, C. B., Fried, A. L., & Feldman, L. G. (2009).** Graduate socialization in the responsible conduct of research: A national survey on the research ethics training experiences of psychology doctoral students. *Ethics & Behavior*, 19(6), 496–518. <https://doi.org/10.1080/10508420903275283>

Kracker, J., & Wang, P. (2002). Research anxiety and students' perceptions of research: An experiment. Part II. Content analysis of their writings on two experiences. Journal of the American Society for Information Science and Technology, 53(4), 295–307. <https://doi.org/10.1002/asi.10041>

Cite the Article:

कन्नौजिया, अमूल कुमार, सिंह, डॉ. अरविंद. (2026). डॉक्टोरल शोधार्थियों में शोध-चिंता एवं शोध नैतिकता के मध्य संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 46-53, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026. DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.05>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.